बुद्ध सप्ताह

प्रारंभ से ही ध्यान और अध्यात्म का सुरुचिपूर्ण प्रचार-प्रसार ही ओशो वर्ल्ड का प्रयास रहा है। इसीलिए प्रतिमाह एक सप्ताह बुद्ध पुरुषों और संतों को समर्पित होता है। हमारा प्रयास यह भी है कि भावों और रचनात्मकता को कला के माध्यम से प्रस्तुत किया जाये, जिसके लिए ओशो वर्ल्ड गैलेरिया में समय-समय पर सेरेमिक, ग्लास, पेंटिंग्स आदि की प्रदर्शनियां भी आयोजित होती हैं।

गौतम बुद्ध, अध्यात्म जगत का एक विशेष स्तंभ। 22 से 28 मई का यह सप्ताह बुद्ध को समर्पित किया गया। पहले दिन सायं छः बजे सुप्रसिद्ध कलाकार श्रुति का ध्यानमय गायन हुआ। यह गायन कुछ ऐसा संवेदन-संपन्न था कि उपस्थित सभी लोग सहज ही ध्यान में डूब गए। ध्यान ही बुद्ध का मुख्य संदेश है। ध्यान से ही करुणा, अहिंसा व प्रेम का जन्म होता है। ओशो कहते हैं बुद्ध का मार्ग सम्पूर्ण समर्पण का मार्ग है। समर्पण, धर्म के प्रति, ताओ के प्रति और अस्तित्व के प्रति। बुद्ध सप्ताह के दौरान प्रतिदिन विपस्सना ध्यान किया गया तथा बुद्ध पर दिये गये ओशो प्रवचनों को सुना गया।

गौतम बुद्ध पारंपरिक नहीं हैं, मौलिक हैं। वे ऐसा नहीं कहते हैं कि अतीत के ऋषियों ने ऐसा कहा था, इसलिए मान लो। वे ऐसा नहीं कहते हैं कि वेद में ऐसा लिखा है, इसलिए मान लो। वे ऐसा नहीं कहते हैं कि मैं कहता हूं, इसलिए मान लो। वे कहते हैं, जब तक तुम न जान लो, मानना मत। उधार श्रद्धा दो कौड़ी की है। विश्वास मत करना, खोजना। अपने जीवन को खोज में लगाना।

– ओशो

एस धम्मो सनंतनो, भाग-5